रियासत टोंक के समय संगीत स्थापना

*मधु बजाज

टोंक के गुणीजनखाने जब देश की स्वतंत्रता स्थापित हुई तब ये रियासतें भी समाप्त हो गई और इनके साथ–साथ इन रियासतों में स्थित गुणीजनखाने भी समाप्त हो गये। टोंक जयपुर, बीकानेर, झालावाड़ आदि इन स्थानों पर नाटकों के मंच होते थे। जिसके लिये विशाल नाटक घरों का निर्माण कराया गया। इन नाटक घरों में इन कलाकारों के समूह नियुक्त होते थे। विभिन्न रियासतों में अपनी–अपनी श्रेष्ठता व गुणों के द्वारा इन कलाकारों के विभिन्न वर्ग होते थे।

जिनमें गायक, पंडित, कलावंत, गंधर्व, कीर्तनकार, संगीतकार, सरोद वादक, सितार वादक, जलतरंग हालूका वादक, पखावज ? बीनकार, कत्थक रासधारी खरताली, हारमोनियम, कव्वाल, गणिकायें, नर्तकियाँ तबला वादक, शहनाई वादक, ढोलकियाँ, नक्कारची आदि थे। कला का सबसे समृद्ध गढ़ जयपुर शहर था। 18वीं शताब्दी में जयपुर में विभिन्न श्रेणी व वर्गों के सैंकड़ों कलाकार यहाँ मौजूद थे, क्योंकि यहाँ गुणीजनखाने में स्थित बहियों (बहिखातों) से मालूम होता है। उदाहरणतः महाराजा रामसिंह के दौर में 155 कलाकार और महाराजा माधोसिंह द्वितीय के समय 125 कलाकारों के नाम सूचियों में अंकित मिले हैं। सन् 1925 ई. में इसी गुणीजन खाने में 150 कलाकारों के नाम मिले हैं और इन कलाकारों का वार्षिक बजट डेढ़ लाख रुपया सालाना था। सन् 1803 ई. में जोधपुर के महाराजा मानसिंह के समय में पुस्तक प्रकाश के बंध संख्या 9 में 12 कलावंत, 38 गायक व 11 कव्वालों के नाम अंकित है और सन् 1869 ई. में राज्य के अभिलेख अनुसार 40 कलाकारों के नाम जिनका वेतन आदि का उल्लेख उदयपुर की संगीत प्रकाश में स्थित है।

सन् 1928 ई. में 20 उच्च कोटि के कलाकार अलवर के गुणीजनखाने में नियुक्त थे। इसी प्रकार टोंक उणियारा धौलपुर एवं झालावाड़ आदि इन छोटी–छोटी रियासतों के कलाकारों में विभिन्न कालों में नियुक्तियाँ व इन्हें दिया जाने वाला वेतन आदि प्राचीन बहियों (बहिखातों) में इनका उल्लेख किया गया है।

इन रियासतों के गुणीजनखानों में उच्च कोटि व प्रसिद्ध विशेषज्ञ कलाकारों में ध्रुपद, धमार, ख्याल, गायक, सारंगी व पखावज, सितार, वीणा वादक, तबला वादक एवं कत्थक नृत्यकारों में नृत्यकियाँ, गणिकायें गायिकायें आदि नियुक्त थे। जिनमें विशेष ख्याति प्राप्त विद्वान कलाकार थे और इन कलाकारों से दरबार हमेशा सुशोभित रहते थे।

राजस्थान की विभिन्न रियासतों में नियुक्त कलाकारों की संख्या देखी जाये तो उस समय सैंकड़ों में मिलती है। तथा दरबारों के अतिरिक्त धार्मिक स्थानों मन्दिरों में भी समर्पित कलाकारों की संख्या रही थी। यद्यपि प्रमाणित रूप के तौर पर 300–400 वर्ष पूर्व के बहिखातों व हस्तलिखित ग्रन्थों का अध्ययन किया जाये तो उस समय इन सभी कलाकारों की संख्या हजारों में दिखाई पड़ती है। जिनमें अपनी–अपनी कला व विद्या के धनी ये ख्याति प्राप्त कलाकार श्रेष्ठ रत्न माने जाते थे।

17वीं शताब्दी में टोंक के प्रथम नवाब अमीर खान बहादुर और महाराजा होल्कर दोनों के बीच बहुत मधुर सम्बन्ध थे और इतिहासकार मुंशी बसावन लाल सक्सेना ने 'अमीर नामा' की किताब में लिखा है कि श्मसीहर की विजय के बाद टोंक की बनास नदी के किनारे संगीत और नृत्य की महफिल का बहुत बड़ा आयोजन किया गया था और इस संगीत समारोह में प्रसिद्ध संगीतकारों एवं नृत्य करने वाले कलाकारों ने भाग लिया और इस विशाल संगीत समारोह का आयोजन किया तथा बनास नदी के दोनों किनारों पर उसे रंग–बिरंगी रोशनी से सजाया गया था।

नवाब अमीर खान और महाराजा होल्कर के सैनिक भी वहाँ मौजूद थे तथा चिरागों की धीमी रोशनी बनास नदी पर फैल रही थी और फिर संगीत व नृत्य की ऐसी महफिल हुई की सुबह हो गई और संगीत समारोह का यह

आयोजन रात भर चलता रहा। कहने का तात्पर्य यह है कि यह घटना टोंक रियासत में संगीत के इतिहास को प्रारम्भ करती है। सन् 1867 ई. में नवाब मोहम्मद अली खान को देश से निकालने के पश्चात् उनके बड़े पुत्र हाफिज मोहम्मद इब्राहिम अली खान केवल 11 वर्ष की आयु में टोंक रियासत की गद्दी पर नियुक्त हुए। प्रारम्भ में उनकी आयु कम होने के कारण रियासत का काम करने के लिए एक समिति बनाई गई थी। जब नवाब इब्राहिम अली खान वयस्क हुए तथा उनको शासन के अधिकार मिले तब रियासत टोंक में उर्दू शेरो शायरी की तरक्की ही नहीं हुई अपितु गीत और संगीत को भी प्रोत्साहन मिलने लगा। उसका मुख्य कारण यह था कि स्वयं नवाब साहब को शायरी के अतिरिक्त बचपन से ही गीत सुनने का भी बहुत शौक था। इसके अतिरिक्त उस दौर में कई देशी रियासतों में भी संगीत और नाटक का बड़ा प्रचलन हो चुका था। विशेष रूप से रियासत जयपुर में तो गुनीजन खाने के नाम से संगीत का एक विभाग स्थापित था। इसी प्रकार जयपुर के अतिरिक्त जोधपुर, धौलपुर, भरतपुर, और झालावाड़ आदि रियासतों में नाटक मण्डलियाँ स्थापित हुई। राजाओं, महाराजाओं की और से नाटकों को प्रोत्साहित किया जाने लगा था। इसी प्रकार विशेष अवसरों पर विशेष जन्म तथा शादी–विवाह और त्यौहारों के अवसरों पर गाने बजाने के समारोह आयोजित होते थे। उन समारोह में राजपूताने के रजवाड़ों के रईसों को भी आमंत्रित किया जाता था। इसका असर भी टोंक रियासत के युवा शासक नवाब इब्राहिम अली खान साहब पर पड़ा और उनके शासन काल में टोंक में संगीत और गाने आदि का प्रचलन ही प्रारम्भ नहीं हुआ अपितु नवाब इब्राहिम अली खान साहब की रुचि के कारण उसको बड़ा प्रोत्साहन भी मिला।

नवाब इब्राहिम अली खाँ के दरबार के प्रसिद्ध संगीतज्ञ–

सन् 1867 ई. में नवाब इब्राहिम अली खान रियासत टोंक के शासक नियुक्त हुये। आपके समय से ही टोंक में संगीत कला को प्रोत्साहित किया गया था। नवाब इब्राहिम अली खान साहब का शासन काल लगभग 63 साल तक रहा था। अन्य नवाबों की अपेक्षा आपका शासनकाल बहुत लम्बे समय तक रहा।

नवाब इब्राहिम अली खान साहब ने सबसे पहले रियासत टोंक के दरबार में पटियाला घराने के कालू जी जिनके बेटे अली बख्श, नवी बख्श और फतेह अली खान थे इनको बुलवा कर अपने दरबार में रखा और उनकी संगीत कला से इतने प्रभावित हुए कि उनको 'तान कप्तान' के खिताब से भी नवाजा। नवाब इब्राहिम अली खान साहब उनसे कभी–कभी गाना भी सुना करते थे। इस तरह गाने का नवाब साहब को इतना शौक बढ़ा कि वो उर्दू शायरी के अतिरिक्त हिन्दी में भी गीत लिखने लगे।

जिनकी लिपि उर्दू होती थी। उनके गीतों का एक संग्रह ए.पी.आर.आई. टोंक में उपलब्ध है। जिनका वर्णन आगे किया गया है उनके गीतों में वे बंदिशें 'इब्राहिम पिया' के नाम से रचने लगे थे। जैसे उदाहरणार्थ दो बंदिशें इस प्रकार प्रस्तुत है–

राग गौड़ मल्हार–

स्थायी – आरे बदरवा जल बरसा रे
तृष्णा को लगी अब आसा रे

अन्तरा – इब्राहिम कृपा रब की सू
जल थल भर गये बमनिया सारे

उसी जमाने में टोंक में गोकी बाई नाम की एक प्रसिद्ध गायिका थी जो संगीत के क्षेत्र में पूरे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध गायिका थी। जो शादी–ब्याह के अवसरों पर विशेष रूप से गीत गाती थी। उसे शास्त्रीय संगीत पर बड़ा अधिकार प्राप्त था। नवाब इब्राहिम अली खान साहब को उसका गाना बहुत पसन्द आया था। कभी–कभी नवाब साहब गोकी बाई को अपने महल में बुलवा कर गाना सुनते थे।

इस प्रकार टोंक में पटियाला घराने की गायन परम्परा शुरू हुई और उस दौर में पटियाला घराने के अनेक गायक कलाकार टोंक में आकर रहे। इनके अतिरिक्त आगरा और जयपुर घराने के गायकों और वादकों को भी नवाब इब्राहिम अली खान ने टोंक में बुलाया और यहाँ टोंक में संगीत का बहुत प्रचार–प्रसार हुआ। टोंक

रियासत में रियासत के चौथे शासक नवाब इब्राहिम अली खान के शासनकाल से भारतीय संगीत की परम्परा स्थापित हुई और नवाब साहब के लगभग 63 साल शासनकाल में भारतीय संगीत की परम्परा को इतना प्रोत्साहन मिला कि नवाब खानदान के कुछ लोगों ने गायकी में दक्षता प्राप्त की। ऐसे लोगों में स्वर्गीय दाता मियाँ, स्वर्गीय माजिद अली खाँ उर्फ मन्जू मियाँ, स्वर्गीय मम्मू मियाँ, स्वर्गीय भूरा मियाँ, प्रमुख थे। इन लोगों की उस समय में संगीत में बहुत रुचि थी।

स्वर्गीय प्रोफेसर बी.आर. देवधर ने अपने लेख 'उस्ताद अमीर खाँ' में लिखा है कि नवाब इब्राहिम अली खान बहुत अच्छे कवि थे। उनके द्वारा बनाई गई कविताओं को राग से संबंधित उनको तान–आलाप से सजाने का काम अली बख्श किया करते थे। नवाब इब्राहिम अली खां साहब की ऐसी बहुत सी रचनायें हैं जो वर्तमान में भी उन्हें विभिन्न घरानों में गाई जाती है। महाराष्ट्र में प्रसिद्ध राग मालकौंस में 'सा सुन्दर बन' इसके अन्तरे के अन्त में 'इब्राहिम माने चन्द्र' ये शब्द आते हैं। जो नवाब इब्राहिम अली खान साहब की बनाई हुई बंदिश है। इसी तरह राग शुद्ध सारंग की रचना 'सुन्दर कंचन का ख्याल' भी नवाब इब्राहिम अली खान साहब द्वारा ही बनाया हुआ है।

नवाब इब्राहिम अली खान साहब का संगीत से अत्यधिक प्रेम के कारण ही टोंक में देश के प्रसिद्ध गायक कलाकारों को यहाँ आमंत्रित किया गया था। नवाब साहब की संगीत कला के प्रति बढ़ती हुई रुचि के कारण यहाँ के लोगों के जीवन पर भी बहुत प्रभाव पड़ा और नवाब इब्राहिम अली खान के समय में रियासत टोंक में संगीत का शौक आम होता गया यहाँ संगीत समारोह के आयोजन किये जाते थे।

टोंक के प्रारम्भिक दौर में संगीत की महफिलें महलों व दरबारों तक ही सीमित थी और इसके पश्चात् साहबजादों की हवेलियों तक पहुँच गया। नवाब इब्राहिम अली खान के दौर में बहुत बड़े–बड़े संगीत समारोह हुआ करते थे और इन समारोह में भाग लेने के लिये प्रसिद्ध कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था। यही नहीं नवाब साहब के सगे संबंधी (साहबजादों) में संगीत कला की इतनी लोकप्रियता बढ़ी कई लोगों ने पूर्ण रूप से संगीत की शिक्षा भी प्राप्त की। नवाब इब्राहिम अली खान साहब पर सांस्कृतिक लोकप्रियता का इतना प्रभाव उत्प्रेरित हुआ कि आपने एक गुणीजन खाना स्थापित किया।

नवाब साहब के शासनकाल में संगीत कला की ही प्रगति नहीं हुई वरन् कई प्रसिद्ध कत्थक नतृकों का भी यहाँ आगमन हुआ और संगीत के साथ–साथ नृत्य की महफिलें भी महलों में खास लोगों के लिये होती थी। परन्तु इन आगन्तुक कलाकारों के नाम प्राप्त नहीं किये जा सके।

नवाब इब्राहिम अली खान साहब होली और बरसात के समय में रंगीन वस्त्रों में हाथी पर बैठकर टोंक के पूरे बाजारों में आपकी सवारी निकलती थी। इन सवारियों में नवाब साहब के दोनों तरफ चार–चार हाथी होते थे तथा इन हाथियों पर संगीतकार व नृतकियाँ नाचते और गाते हुये चलते थे।

इस प्रकार नवाब साहब को संगीत का बहुत अच्छा ज्ञान प्राप्त था और विशेष संगीत समारोह में आप हारमोनियम तथा सारंगी भी बजाया करते थे। नवाब इब्राहिम अली खान के शासनकाल में संगीत कला के प्रमुख कलाकारों में उस्ताद अली बख्श आप इतना अच्छा ख्याल व थाट लय में गाने के प्रसिद्ध उस्ताद थे, आपके जैसा दूसरा कोई आपकी तुलना में नहीं था। हाँ यद्यपि आपकी तुलना में गायकी में कोई था तो वो सिर्फ फतेह अली खान साहब थे ये भी सिर्फ तानों की लयकारी में थे जो तानों को बहुत अच्छे तरीके से प्रदर्शित करते थे। उस्ताद अली बख्श खाँ का गायन नवाब इब्राहिम अली खान साहब को बहुत प्रसन्नचित्त कर देता था। क्योंकि अली बख्श व फतेह अली खाँ का नाम संगीत गायन में पूरे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध था। आपने हिन्दुस्तान की प्रसिद्ध गायिका गोकी बाई से संगीत की शिक्षा प्राप्त की और आप तानरस खान के भी शिष्य रह चुके थे।

नवाब इब्राहिम अली खाँ के शासन में कलाकारों को उपहार भेंट–

नवाब इब्राहिम अली खान आपके गाने से बहुत प्रभावित हुये और आपको 'जनरल गायकाने वक्त' का खिताब देना चाहते थे। नवाब साहब ने अपने दरबार में यह ऐलान कराया कि किसी को कोई ऐतराज नहीं हो तो अली बख्श से मुकाबले के लिये आये अली बख्श से कोई मुकाबला करने नहीं पहुँचा और खिताब देने की तारीख निश्चित हुई और जिस दिन खिताब दिये जाने लगा ठीक उसी समय एक शहर से सारंगी वादक उस्ताद मिर्च खान टोंक आये और नवाब इब्राहिम अली खान साहब से मिले और कहा कि महाराज आपको पूरा अधिकार है आप जिसे

चाहें उसे यह खिताब दें सकते हैं परन्तु मेरी एक छोटी सी ख्वाहिश है कि यह खिताब अली बख्श को तब दिया जाये जब अली बख्श मेरे साथ गायें और मैं सारंगी बजाऊं।

यद्यपि मैं इनकी संगत करने में असफल रहूं तो यह खिताब ही नहीं बल्कि एक–एक सैर के मेरे हाथों में पहने ये लौहे के कड़े जिसे कोई गायक आज तक मुझसे नहीं उतरवा सका। यदि अली बख्श के संगीत ने मुझे शिकस्त दी और उसने मेरे ये कड़े उतरवा दिये तो मैं इन्हें खिताब का सही हकदार समझंगा और नवाब इब्राहिम अली खान साहब ने इस संगीत समारोह का आयोजन कराया जिसमें कई प्रसिद्ध कलाकारों को इस समारोह में आमंत्रित किया गया था। उस्ताद अली बख्श साहब ने नवाब सहाब से कहा कि महाराज आप इनके हाथ के कड़े उतरवा दीजिये परन्तु मिर्च खाँ ने कड़े उतारने से मना कर दिया और नवाब साहब ने मेहमान कलाकार मिर्च खाँ की बात मानी और नजर बाग में चबूतरे वाली कोठी टोंक में यह संगीत समारोह का आयोजन किया गया था।

संगीत समारोह की शुरुआत में उस्ताद अली बख्श ने सर्वप्रथम यमन, शुद्ध कल्याण एवं भीम पलासी आदि रोगों को प्रस्तुत किया। रात्रि 10 बजे से इस संगीत समारोह का आयोजन हुआ और इसमें सभी दरबारी लोग नवाब साहब के संबंधी आदि सभी मौजूद थे। अली बख्श जो तान या मुरकी जिस जगह से लेना शुरु करते तो मिर्च खाँ पहले से ही वही तान सारंगी में बजाना शुरु कर देते थे।

उस्ताद मिर्च खान ने ऐसी कोई सी तान नहीं छोड़ी जिसे वह अली बख्श के गाने से पहले ही उसे बजा देते थे। रात्रि 2 बजे नवाब इब्राहिम अली खान ने कहा कि 'आलिया कोई राग विभास भी तो होती है' और अली बख्श ने हाँ कहा और मारवा थाट से विभास राग को शुरु किया। अली बख्श के साथ तबला वादक करम बख्श थे। इसी प्रकार इन दोनों संगीतज्ञ कलाकारों का निर्णायक जयपुर के सितारवादक उस्ताद अब्दुल हफिज खाँ को बनाया गया था।

उस्ताद अली बख्श ने रागविभास प्रस्तुत किये आधा घण्टा ही हुआ कि अब्दुल हफीज खाँ जयपुरी जो जज बने थे। हाथ बांधे खड़े हो गये और कहा कि अली बख्श जैसे गवैये व तानों की सुन्दर प्रस्तुति वहीं उस्ताद मिर्च खाँ ने धैवत को सारंगी पर साफ तौर पर बताया। ये दोनों कलाकार अपनी–अपनी जगह महारथी हैं। उस्ताद मिर्च खाँ नवाब साहब के कुछ कहने से पहले ही बोल उठे कि महाराज 'मैं अपने दोनों हाथों के कडे उतार रहा हूँ।'

सीधे हाथ का कड़ा अली बख्श को और दूसरे हाथ का कड़ा सितारवादक अब्दुल हफीज खाँ को जो जज है उनको भेंट करना चाहूंगा क्यों कि ऐसी सच्ची संगीत की संगत को सुनना भी किसी ऐसे वैसे के बस की बात नहीं है और महाराज आप अपने दरबारी गवैये अली बख्श को यह खिताब प्रदान करें इसके असली हकदार उस्ताद अली बख्श ही हैं।

उस्ताद मिर्च खान अपने कड़े उतारकर बैठ गए तभी अली बख्श ने नवाब साहब से कहा महाराज मैं जवान हूँ और उस्ताद मिर्च खान वृद्ध हो चुके हैं यद्यपि देखा जाये तो मिर्च खान ही जीते हुये हैं। परन्तु इतनी सी बात पर अपनी हार मानना इनका बड़प्पन है। क्योंकि जो तान या जो मुरकी मैं लेना चाहता उस्ताद मिर्च खान पहले से ही उसे बजा देते थे। परन्तु नवाब साहब के जजों ने अली बख्श को जीता हुआ बताया और फिर नवाब साहब ने अली बख्श को 'जनरल गायकाने वक्त' का खिताब प्रदान किया।

नवाब इब्राहिम अली खाँ को संगीत से ही नहीं बल्कि शायरी से भी बहुत लगाव था। आपका उपनाम खलील था।

आपके शासन काल में बहुत प्रसिद्ध शायर हुआ करते थे जो उर्दू में शायरी किया करते थे। यही नहीं नवाब साहब स्वयं भी उर्दू में शेरो–शायरी लिखा करते थे। आपके शासनकाल में स्वर्गीय बिस्मिल खैराबादी, स्वर्गीय उस्ताद जहीर देहलवी, स्वर्गीय मुश्तर खैराबादी, स्वर्गीय नवाब सुलेमान खाँ आप लखनऊ के मुख्य शायर थे। इनके अतिरिक्त स्वर्गीय साहबजादा अहमद अली खाँ रोनक, स्वर्गीय नवाब मौलवी सिद्धीक हसन साहब और स्वर्गीय देहलवी आदि प्रमुख कलाकार थे। नवाब साहब के भाईयों में स्वर्गीय साहबजादा मोहम्मद इस्हाक खाँ, स्वर्गीय साहबजादा अब्दुल बहाव खान तथा स्वर्गीय अब्दुल रहिम खान भी विद्वान थे।

अन्त में उस दौर के सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति स्वर्गीय मेहमूद शिरानी साहब जो उर्दू, फारसी व अरबी के प्रसिद्ध विद्वान थे आपका नाम पूरे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध था। इनके अतिरिक्त आप अंग्रेजी भाषा के भी पूर्ण रूप से विद्वान थे। आपको कई विषयों का ज्ञान प्राप्त था। आप लाहौर से रिटायर के बाद टोंक आये और यहीं आपका देहान्त हुआ। आपके पुत्र स्वर्गीय अख्तर शिरानी साहब जिनका शायरी में पूरे हिन्दुस्तान में आपका नाम प्रसिद्ध था।

इनके अतिरिक्त नवाब इब्राहिम अली खान के शासनकाल में उर्दू शायरी के स्वर्गीय उस्ताद आबरु जाम साहब स्वर्गीय उस्ताद सौलत साहब, स्वर्गीय असद लखनवी, स्वर्गीय उस्ताद शफीक अहमद, स्वर्गीय रजा साहब, स्वर्गीय बज्मी साहब आदि कलाकार उस दौर में मुस्लिम लोग ही नहीं वरन् हिन्दु समाज के लोगों में भी उर्दू शायरी के विद्वान शायर होते थे जिनमें स्वर्गीय डॉ. मनसुख दास जी, स्वर्गीय गिरधरदास जी बोहरा, स्वर्गीय डॉ. श्याम लाल जी, स्वर्गीय डॉ. रामनिवास जी जो एक लेखक भी थे, और स्वर्गीय जगदीश बोहरा आदि कलाकार नवाब साहब के समय में प्रसिद्ध उर्दू के शायर थे और उर्दू में शायरी किया करते थे।

नवाब इब्राहिम अली के समय में स्वर्गीय उस्ताद असगर अली साहब जिन्होंने 'हदीकऐ–राजस्थान' के नाम से 'तारीखे टोंक' यह पुस्तक लिखी जो सन् 1901 ई. में प्रकाशित हुई।

इस पुस्तक में बज्में खलील के नाम पर एक परिशिष्ठ अंकित है जिसमें एक मुशायरे का वर्णन किया गया है, जिसमें टोंक के 85 शायरों ने एक साथ शेरो–शायरी का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमें स्वर्गीय पंडित रामकरण जोशी भी थे जो उर्दू और फारसी के शेर कहते थे और आपकी पुस्तक 'तारीख परगनात टोंक' आपने ही लिखी थी।

श्री चोबे ने अपनी पुस्तक राजस्थान संगीतकार में आलिया फत्तु का समय 1800 ई. के लगभग बताया है तथा आलिया फत्तु का समय निश्चित ही 25–30 वर्ष के बाद का होना चाहिये तथा इन दोनों का जन्म सन् 1850 ई. ही लिखा है। ये दोनों आलिया फत्तु एवं फतेह अली बहुत समय तक टोंक दरबार में नियुक्त रहे। अतः पंजाब घराने के कुछ गायक कलाकारों का परिचय दिया गया है कि ये कलाकार आलिया फत्तु के पंजाब जाने से पूर्व की पंजाब–परम्परा के प्रतिनिधि हैं। जिनमें पंजाब के स्वर्गीय रसूल बैग तथा इनके पुत्र स्वर्गीय गुलाब रसूल महाराजा मानसिंह के समय सन् 1803 से 1834 ई. तक नियुक्त थे। इसका तात्पर्य यह है कि यहाँ अली बख्श व फतेह अली खान का समय काल बताया गया है।

नवाब इब्राहिम अली खान के शासनकाल में उस्ताद अली बख्श के साथ तबला वादक उस्ताद करम बख्श थे। आप तबले पर 'गुटर गूँ गुटर गूँ' की ऐसी आवाज निकालते थे कि पास बैठे कबूतर भी नीचे आ जाते थे। आपका संगीत सुनने साहबजादा दाता मियाँ की हवेली टोंक में संगीत के कलाकारों की दिन–रात भीड़ लगी रहती थी। यहाँ संगीतज्ञों का आयोजन होता रहता था।

प्रसिद्ध शायर उस्ताद स्वर्गीय भाईजान 'आशिक', साहबजादा स्वर्गीय अशरफ खान, साहबजादा स्वर्गीय शरीफ खान आदि अच्छे कलाकार थे। इसी प्रकार साहबजादा स्वर्गीय अब्दुल साहब, दादरा, ठुमरी ओर ख्याल आदि लिखते थे और स्वर्गीय अब्दुल वाहिद खाँ साहब हिन्दी राग–रागनियों में बहुत सुन्दर ठुमरियाँ बनाते थे। आप नृत्य कला और ठुमरी की बंदिशों में बहुत अच्छा प्रदर्शन भी किया करते थे।

अब्दुल वाहिद खाँ नवाब इब्राहिम अली खान पुत्र थे और सन् 1952 ई. में आपका देहान्त हो गया था।

इसी प्रकार जाम साहब भी गायन व वादन के उच्च कोटि के कलाकार थे और प्रसिद्ध शायर भी थे। आपका उपनाम 'जाम' साहब था। आप दादरा ठुमरी के साथ–साथ नाटक आदि भी लिखते थे और उन्हें स्टेज पर प्रस्तुत किया करते थे। जाम साहब नाटक कम्पनी के निर्देशक व इन्चार्ज भी थे। आप नवाब इब्राहिम अली खान साहब के समय में ही मौजूद थे। नाटकों की प्रस्तुति का आयोजन नवाब इब्राहिम अली के दौर से ही स्थापित हो चुका था। नवाब साहब के शासनकाल में शास्त्रीय संगीत की ही नहीं यद्यपि नाट्यकला को भी बहुत प्रोत्साहन मिला नवाब साहब हिन्दी में राग–रागनियाँ व ठुमरियाँ आदि लिखा करते थे। और साहबजादों में साहबजादा स्वर्गीय इमदाद अली खान 'नजर' भी गजल, ठुमरी, स्थायी व सेहरे, गीत व नाटक आदि लिखने में निपुण थे।

टोंक में स्थित एक मकान हुआ करता था जिसे 'नोशे मियाँ का पुल' के नाम से जानते हैं। यहाँ एक

'खजुर वाली हवेली' स्थित थी जिसमें नाटकों के रिहर्सल होते थे और नवाब साहब एवं उनके परिवार के लोग नाटक देखने जाया करते थे और नाटक के लिये विशेष कलाकारों को जयपुर और अन्य बड़े व दूसरे शहरों से नाटक कम्पनियाँ आमंत्रित की जाती थी। इसके बाद राज थियेटर में नाटकों का मंचन हुआ करता था। वर्तमान में वह आज राज सिनेमा के नाम से टोंक में स्थित है।

नवाब इब्राहिम अली खाँ के दौर में परम्परागत अनुसार चार दरबार हुआ करते थे। एक तो इदुलजुहा (ईद), इदुल फितर (ईद), तीसरा स्टेट कायम होने पर और चौथ नवाब साहब की सालगिरह (जन्मदिन) पर ये चारों दरबार हुआ करते थे। इसमें नवाब साहब को 'नजरे' पेश की जाती थी। एक–एक व्यक्ति खड़े होकर नवाब साहब को बड़ी इज्जत से सलाम करते थे और इन दरबारों में संगीत व नृत्य का आयोजन किया जाता था तथा हर दरबार पर बैण्ड बाजा मौजूद रहता था और समय–समय पर बजता रहता था। नवाब साहब की सालगिरह पर प्रसिद्ध गायक, वादक कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था और यही नहीं वरन् नृत्यकार भी इस समय अपना नाच–गाना प्रस्तुत करते थे। इन अवसरों पर अच्छे व गुणी लोगों को ईनाम एवं उपाधियाँ भी दी जाती थी और कई प्रकार की प्रतियोगिताएं भी हुआ करती थी।

नवाब इब्राहिम अली खान के शासनकाल में टोंक के गुणीजन खाना जिसमें संगीत समारोह हुआ करते थे और यहाँ प्रसिद्ध गायक एवं वादक कलाकारों का आगमन हुआ। टोंक में पटियाला घराने के गायक ही नहीं यद्यपि आगरा और जयपुर घराने के गायकों को भी नवाब इब्राहिम अली खान ने टोंक में आमंत्रित किया और टोंक में गायकी का रिवाज इतना बढ़ा कि यहाँ के कलाकारों ने राजस्थान बनने के पश्चात् दूरदर्शन और आकाशवाणी के केन्द्रों में अपनी कला प्रदर्शित करने लगे। इन्होंने गायकी के साथ–साथ तबला वादन एवं सारंगी वादन में भी अपना–अपना स्थान बनाया। मोहम्मद अमीर खान साहब जैसे कलाकार का टोंक में जन्म हुआ।

उस्ताद अमीर खान साहब की कला पर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में पारुल बोहरा ने अपना शोध ग्रन्थ प्रस्तुत कर सन् 2008 में पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उनके ग्रन्थ का विषय है 'मोहम्मद अमीर खान साहब' की भारतीय संगीत को देन।

उस्ताद अमीर मोहम्मद खां साहब के दादा के दादा का नाम बाजे खां था। आपका जन्म मेवात में हुआ था। ओर फिर आप बाद में टोंक आ गए थे। स्वर्गीय बाजे खां साहब बहुत अच्छे गायक ही नहीं बल्कि एक उच्च कोटि के सारंगी वादक भी थे। आप नवाब इब्राहिम अली खां साहब के दरबार में कर्मचारी थे। आप नवाब साहब की सालगिरह आदि के सुअवसर पर खूब गाते–बजाते थे और खुशियाँ मनाते थे और नवाब साहब भी आपके संगीत से बहुत प्रभावित होते थे। उस्ताद अमीर खाँ साहब के परदादा जिनका नाम स्वर्गीय शेहजाद खाँ था आप एक उच्च कोटि के तबला वादक व गायक थे और नवाब इब्राहिम अली खाँ साहब के समय में टोंक गुणीजन खाने में तबला बजाया करते थे।

इसी तरह स्वर्गीय दौलत खाँ साहब भी उच्च कोटि के तबला वादक थे। आप शेहजाद खां के ज्येष्ठ पुत्र व अमीर खां साहब के दादा के बड़े भाई थे। आप भी टोंक गुणीजनखाने में तबले की संगति किया करते थे। इसी प्रकार स्वर्गीय मोलाबख्श खान आप उस्ताद अमीर खान साहब के दादाजी थे ओर नवाब साहब के समय में उच्च कोटि के सारंगी वादक थे। इनके अतिरिक्त स्वर्गीय उस्ताद गुलाम मोहम्मद खान जो कि उस्ताद अमीर खां के पिता थे ओर आप भी एक उच्च कोटि के तबला वादक थे। उस्ताद अमीर खां साहब के परदादा स्वर्गीय बाजे खां नानाजी स्वर्गीय हुरमत खान व दादाजी स्वर्गीय मोलाबख्श खां आप सभी बहुत अच्छे सारंगी वादक थे और आपके पिता उस्ताद गुलाम मोहम्मद खां रियासत टोंक के दरबार में तबला वादक के पद पर नियुक्त थे। जबकि इन संगीत कलाकारों की उस समय आमदनी बहुत कम हुआ करती थी परन्तु उस समय के लोग जवाबो व राजा–महाराजाओं के दरबार में नौकरी करना बहुत बड़ी बात समझते थे।

इनके अतिरिक्त नवाब इब्राहिम अली खान के दरबार में पटियाला घराने के उस्ताद स्वर्गीय बाकर अली खान साहब भी एक प्रसिद्ध गायक कलाकार थे ओर आप नवाब साहब के दरबार में संगीत सुनाया करते थे। आप पटियाला घराने के उत्तराधिकारी व स्वर्गीय अहमद जान खां के बेटे थे। आप काफी समय तक टोंक दरबार में नियुक्त थे, परन्तु नवाब साहब के देहान्त के पश्चात् टोंक का गुनीजन खाना बिखर गया ओर संगीत के आयोजन भी कम होते गये। इसी कारण बाकर अली खान भी टोंक छोड़कर मिलेर कोटला पंजाब चले गये। इसी प्रकार

स्वर्गीय अब्दुल कादर खां आप भी एक प्रसिद्ध गायक कलाकार थे और नवाब साहब के दरबार में संगीतज्ञ के पद पर आसीन थे। उस्ताद अब्दुल कादर खान साहब की शादी उस समय टोंक में ही होने के कारण ये यहीं स्थित हो गये। उस्ताद अब्दुल कादर खान आगरा घराने के व स्वर्गीय फैयाज खान साहब के शिष्य थे।

नवाब सआदत अली के समय में संगीत कलाकार–

राजस्थान के नाटक कर्मियों को हमें विस्तार रूप से समझने के लिये पहले हम इनका संक्षिप्त रूप वर्णित कर रहे हैं। प्रथम भाग में सबसे पहले स्वर्गीय लक्ष्मणदास जी डांगी थे, जिसमें स्वर्गीय मास्टर तुलसी दास जी, स्वर्गीय मास्टर रूपा जी, स्वर्गीय मास्टर राणीदान जी, स्वर्गीय मास्टर चतुर्भुज आदि इन कलाकारों की अहम् भूमिकाएं थी। द्वितीय भाग में नाटकों के कलाकारों के क्रम में स्वर्गीय प्रेमसुख जी व्यास थे। तश्तीय भाग में स्वर्गीय माणिकलाल जी डांगी का दौर था तथा इनके नाटकों में स्वर्गीय मास्टर निसार साहब के अतिरिक्त नाटक से जुड़े सैंकड़ों प्रसिद्ध कलाकार थे। चौथे भाग में स्वर्गीय गणपतलाल जी डांगी का दौर था। आप प्रतिभा सम्पन्न बहुमुखी व प्रसिद्ध कलाकार थे और पाँचवे भाग में स्वर्गीय कन्हैयालाल जी पंवार का दौर था।

जिसमें बहुत सी अभिनेत्रियाँ भी थी जिनमें स्वर्गीय रानी उर्वशी, स्वर्गीय सुशीला, स्वर्गीय मीरा, स्वर्गीय शील एवं स्वर्गीय रामदुलारी आदि उस समय की प्रसिद्ध अभिनेत्रियाँ थी। जिन्होंने नाटकों में अपनी भूमिका निभाई। स्वर्गीय कन्हैयालाल जी पंवार राजस्थानी पारसी व हिन्दी नाटकों के एक सफल निर्देशक थे और स्वर्गीय शुभकरण जालान इनकी नाटक कम्पनी के मालिक थे। इन्होंने पंवार, नरसी और मिनर्वा नाटक कम्पनियों के अतिरिक्त छोटी–बड़ी सभी प्रकार की नाटक कम्पनियाँ स्थापित की। आपने ही राजस्थानी नाटक को सर्वप्रथम मंच पर प्रस्तुत किया और आपकी नाटक कम्पनी का 'अप्सरा' नामक नाटक प्रकाशित हुआ। राजस्थान के पारसी–हिन्दी नाटकों के कलाकारों के योगदान से पूर्व कुछ तथ्यों को उजागर किया गया है कि पश्चिमी तकनीक के द्वारा खेले जाने वाले नाटकों में पहला नाटक 'इन्द्रसभा' था।

सन् 1853 ई. में लखनऊ के केसर बाग में स्वर्गीय मुन्शी अमानत द्वारा लिखा यह नाटक मंच पर प्रस्तुत किया गया था। जब यह नाटक प्रसिद्ध हुआ तो इसे देखकर देश में अनेक नाटक कम्पनियाँ स्थापित हुई, ना जाने ये नाटक कम्पनियाँ कितनी बार बनी ओर टूटी ओर फिर से उभर कर सामने आई जिनमें ऐसे नाटकों के लिये कलकत्ता व बम्बई आदि नाटकों के केन्द्र स्थल बन गये और ये नाटक कम्पनियों के गढ़ कहलाये गये। राजस्थान में सर्वप्रथम बरेली के जमादार साहब की थिएट्रिकल कम्पनी स्थापित हुई थी और इस नाटक कम्पनी के अनुसरण में कवि, लेखक, लोक कलाकार व निर्देशक स्वर्गीय लक्ष्मण दास जी डांगी ने सन् 1956 ई. में 'मारवाड़ नाटक कम्पनी' की स्थापना की थी।

इस नाटक कम्पनी में 'जानकी स्वयंवर'' 'हरिशचन्द्र' 'द्रौपदी स्वयंवर, 'पूरण भगतः, आदि नाटक मंच पर प्रस्तुत किये गये थे। और इस नाटक कम्पनी में 75 गायक कलाकारों को शरण दी हुई थी। इस नाटक कम्पनी ने जयपुर में भी बहुत से नाटकों को मंच पर प्रस्तुत किया था तथा अन्य शहरों के अतिरिक्त इस कम्पनी ने लखनऊ के नवाब शीश महल के यहाँ कच्चा थिएटर बनवाकर उसमें कुछ नाटकों को दिखाया। ये नाटक इतने प्रसिद्ध हुये कि दूसरी नाटक कम्पनियों के मालिकों को भी इस दिशा में नाटकों के प्रति बहुत उत्साहित हुये। बीकानेर राज्य में चार वर्ष पश्चात् स्वर्गीय प्रेम सुख जी व्यास ने 'जे.सी. नाटक कम्पनी' जोधपुर बीकानेर के नाम द्वारा स्थापित की थी। इस नाटक कम्पनी का पहला नाटक 'हरिशचन्द' था जिसे 'बीकानेर के कोट गेट' के अन्दर झलाय वालों की कोठड़ी में कच्चा थिएटर बनाकर इस नाटक की प्रस्तुति की गई थी। इस नाटक कम्पनी के मालिक प्रेम सुख जी व्यास निर्देशक ही नहीं वरन् बहुत अच्छे लेखक भी थे।

इस नाटक कम्पनी ने बीकानेर व जोधपुर के अतिरिक्त पटना, बम्बई, भागलपुर व दिल्ली इन स्थानों में भी अपने नाटकों को प्रस्तुत किया था। व्यास जी के प्रस्तुत किये गये नाटकों को बीकानेर के लालगढ़ किले में महाराज गंगासिंह जी ने भी देखे और उनकी बहुत प्रशंसा की थी।

नाटकों को रंगमंच के स्तर तक पहुँचाने में लक्ष्मणदास जी डांगी और प्रेमसुख जी व्यास इन दोनों की सर्वप्रथम भूमिका रही। इन दोनों ने बहुत अच्छे–अच्छे नाटकों की स्थापना की थी। और इन्होंने इन नाटकों के माध्यम से देशवासियों का ध्यान आकर्षित किया जिनमें गीत, संगीत, नृत्य–नाट्य व राजस्थानी भाषा सभी होते थे। इनके कारण भी लोगों में नाटकों के प्रति रुझान बढ़ा। बीकानेर, भरतपुर, जोधपुर, झालावाड़, जयपुर ने ही नहीं

बल्कि टोंक के नवाब ने भी पारसी–हिन्दी रंगमंच में राजस्थान के कलाकारों के योगदान को स्वीकार किया था। न्यू अल्फ्रेड व खटाऊ अल्फ्रेड नाटक कम्पनियाँ भी जयपुर में आई। यही नहीं जोधपुर, बीकानेर, समदड़ी आदि राज्यों के आस–पास के गाँव जिनमें फलौदी, शेखाला, गूदोंच, खोड़, मतोड़ा आदि गाँवों के प्रसिद्ध गायक भी इस रंगमंच के लिये अच्छे कलाकार रहे।

- राजस्थान के लोक कलाकारों का संगीत देश की सभी नाटक कम्पनियों में प्रचलित था।
- स्वर्गीय माणिकलाल डांगी ने सन् 1933 ई. में पंजाब के स्वर्गीय मुलकराज और स्वर्गीय मदनपुरी के मार्गदर्शन से 'हेवलिंग डांस पार्टी' स्थापित की थी। इन्होंने सन् 1936 से 1962 ई. तक कई नाटकों का प्रदर्शन किया और नई नाटक कम्पनियाँ भी खोली थी।
- इसी प्रकार स्वर्गीय गणपतलाल जी डांगी ने सन् 1942 ई. में 'दिवार एफर्ट थिएट्रिकल कम्पनी' की प्रस्तुति अजमेर में की गई और इस कम्पनी को स्थापित करने में आपने बहुत परिश्रम किया।
- माणिकलाल जी डांगी ने अपने 'शाहजहाँ थिएटर कम्पनी' और 'कोरोनेशन कम्पनी' स्थापित की ये बहुत प्रसिद्ध कम्पनियाँ थीं जिनका संचालन कई वर्षों तक कायम रहा।
- माणिकलाल जी नाटकों को मंच पर प्रस्तुति के लिये देशभर में भ्रमण किया करते थे और आपके पास बहुत प्रसिद्ध कलाकारों का एक संग्रहालय था।
- कलकत्ता में राजस्थानी भाषा का प्रथम नाटक 'रामू चनणा' जिसे स्वर्गीय भरत व्यास द्वारा लिखा गया था। अल्फेड थियेटर कम्पनी ने इस नाटक को प्रदर्शित किया। इसके बाद स्वर्गीय कन्हैयालाल जी पंवार जो राजस्थानी नाटकों में अहम भूमिका निभाया करते थे। जिनमें 'बिनणी जोरा मर दी आई' 'कुंवारो सासरो', 'चून्दड़ी' आदि नाटकों को भी प्रस्तुत किया गया था।''

राजस्थान में पारसी लोक मंच की कला शैली को प्रायः सभी राजा–महाराजा और नवाबों ने स्वीकार किया और यहाँ पर पारसी रंगमंच की कम्पनियों को आमंत्रित किया गया और इन नाट्य प्रस्तुतियों के कारण जनता का ध्यान इस और तेजी से बढ़ने के पश्चात् देश के कई गाँवों व शहरों में रंगमंच बनाकर नाटक खेलने की परम्परा स्थापित हुई।

उस समय हिन्दी भाषा का इतना प्रचलन नहीं था और उर्दू भाषा में नाटकों ने श्रोताओं को बहुत आकर्षित किया और इन नाटकों में शेरों–शायरी भी हुआ करती थी जिनमें दर्शकों के मन को मोह लिया जाता था। इसी प्रकार जयपुर, भरतपुर, बीकानेर, धौलपुर, झालावाड़ व जोधपुर कोटा और बूँदी के नरेशों ने ही नहीं वरन टोंक के नवाब ने भी पारसी कला शैली को सुरक्षित रखने में अग्रणीय रहे। नाटकों के लेखक और शायर स्वयं रंगमंच के स्वरुप से भलीभांति परिपूर्ण थे। इसी कारण उनके नाटक प्रशंसा रहित होते थे। सन् 1879 से 1885 तक का यह समय उर्दू नाटकों को बहुत पसंद किया जाता था। यहाँ तक कि जयपुर के महाराजा रामसिंह द्वितीय ने अपने शासनकाल में सन् 1885 से 1880 ई. में एक नाटकघर बनवाया था जो वर्तमान में भी रामप्रकाश टाकीज के नाम से प्रसिद्ध है। इन नाटकघरों में प्रायः सामाजिक स्वरुप के मंच प्रस्तुत किये जाते थे। इनमें प्रायः रामायण और रामलीला पर आधारित नाटक खेले जाते थे। इससे पहले भी जयपुर में नाटक की परम्परा कायम थी और उसके अनुरुप नाटकों की प्रस्तुति का प्रचलन था तथा राजस्थान के विभिन्न राजा– महाराजाओं की तरह टोंक रियासत के नवाब इब्राहिम अली खान साहब का सन् (1929 से 1930) का वह समय था जिसमें नवाब साहब को नाटक देखने का बहुत शौक था। भरतपुर के स्वर्गीय लाला सूरजभान के रजिस्टर से हमें टोंक के नाटकों की गतिविधियाँ प्राप्त होती हैं। सन् 1928 ई. को जब भरतपुर के महाराज किशन सिंह को निर्वासित किया गया तो उनके सानिध्य में नाटक मण्डली के मंच हुआ करते थे वह भी समाप्त हो गये फिर इस नाटक मण्डली का सारा सामान कुछ नीलाम कर दिया और कुछ सामान स्वर्गीय सूरजभान ने खरीद लिया था। और इस नाटक मण्डली को सूरजभान ने टोंक में 'भरतपुर ड्रामेटिक सोसायटी' के नाम से स्थापित किया। इस नाटक मण्डली के पीछे जयपुर सांगानेरी गेट पर स्थित जयपुर इम्पीरियल होटल के मालिक स्वर्गीय मदन गोपाल जी की प्रेरणा थी और सन् 1928 से 1929 ई. अगस्त से दिसम्बर तक यह मण्डली टोंक में स्थित थी और फिर सूरजभान ने इस नाटक मण्डली का सारा सामान टोंक के स्वर्गीय बशीर खाँ को बेचकर वापस भरतपुर लौट गये। टोंक की इस 'भरतपुर ड्रामेटिक सोसायटी' ने देश के कई क्षेत्रों में नाटकों का मंचन किया था। इस नाटक मण्डली के कलाकारों में स्वर्गीय अब्बास मोहम्मद, स्वर्गीय

बुद्धा नाई, स्वर्गीय अब्दुल हाजी साहब, स्वर्गीय हुसैन अहमद अब्दुल, स्वर्गीय कादिर खाँ, स्वर्गीय अमीनुद्दीन, स्वर्गीय बाबू अब्दुल हमीद मिस्त्री, स्वर्गीय अहमद अली साहब, स्वर्गीय बजरंग अहमद अली साहब, स्वर्गीय अब्दुल्ला खाँ, स्वर्गीय अब्बास अली, स्वर्गीय अहमद रजा खाँ, स्वर्गीय अकबर व किशन बाबू आदि कलाकार थे।

जाम साहब द्वारा लिखा पहला नाटक जिसका नी नाम 'हरदिल अजीज' था और 'भरतपुर ड्रामेटिक रों सोसायटी' मण्डली के पश्चात् टोंक में अजमेर की नाटक मण्डली जिसके निर्देशक स्वर्गीय कल्लू बादशाह थे। इस नाटक मण्डली में 'खूबसूरत बला' चन्द्रा बकावली, लैला मजनूं, शीरी फरहांद, देहली दरबार, न गुलरु जरीना आदि इन नाटकों को टोंक में मंच पर न प्रस्तुत किये जाते थे।

नाट्य कला की प्रस्तुति का दौर नवाब इब्राहिम अली खान के दौर में ही प्रारम्भ हो चुका था। फिर उनके पुत्र नवाब सआदत अली खान के शासनकाल में नाट्य कला का दौर बहुत तेजी से बढ़ा और सन् 1930 से 1946 ई. तक टोंक में विभिन्न स्थानों से नाटक मण्डलियाँ आई थी और अपना खेल दिखाकर चली जाती थी। नवाब सआदत अली खाँ के संरक्षण से पूर्व भी यहाँ बहुत सी नाटक मण्डलियाँ आया करती थी।

इसी प्रकार टोंक में पारसी जुब्ली थिएट्रिकल कम्पनी भी यहाँ आई थी जिसके मालिक प्रसिद्ध पारसी नाटक प्रेमी व अभिनेता स्वर्गीय नाजरजी थे। नाजर जी यहाँ टोंक में बहुत समय तक रहे और आप टोंक में बिमार होने के पश्चात् यहीं देहान्त हो गया फिर इन्हें जयपुर की पारसी आरामगाह में दफन कर दिया। इसके पश्चात् प्रसिद्ध नाटक मण्डली 'अलेक्जेंड्रिया ड्रामा कम्पनी' भी टोंक में आई थी।

यह नाटक मण्डलियाँ टोंक में नवाब साहब की सालगिरह पर व अन्य अवसरों पर आया करती थी और अपना नाटक दिखाकर चली जाती थी। नवाब सआदत अली खान साहब को काव्य एवं नाट्य कला से बहुत प्रेम था।

इसी प्रेम के द्वारा झालावाड़ के स्वर्गीय महाराजा भवानी सिंह और रामपुर के नवाब साहब से आपकी बहुत घनिष्ठता थी। उनकी नाटक मण्डली में स्वर्गीय कादर बख्श इसके निर्देशक व स्वर्गीय अब्दुल जब्बार खान मैनेजर थे। इनके अतिरिक्त अन्य कलाकारों में स्वर्गीय फजलुद्दीन (नायक) व स्वर्गीय गुलाम रसुल (वादक) थे और हास्य कलाकारों में स्वर्गीय हुसैन उद्दीक फ्रौक, स्वर्गीय कमरुद्दीन, स्वर्गीय मोहम्मद रमजान, स्वर्गीय हुसैन बख्श, स्वर्गीय इस्माईल साहब स्वर्गीय नत्थू जी, स्वर्गीय ओमप्रकाश जी, स्वर्गीय माणीलाल व स्वर्गीय मोहम्मद हुसैन आदि कलाकार थे। नवाब सआदत अली खान के दौर में नाटक मण्डलियों में पुरुष कलाकार ही नहीं वरन् महिला कलाकार भी हुआ करती थी जिनमें स्वर्गीय नन्हीं बाई, स्वर्गीय बिब्बो बाई, स्वर्गीय अशरफी बाई, स्वर्गीय नूरी, स्वर्गीय मैहरुनिशा, स्वर्गीय मुमताज व स्वर्गीय कल्लो बाई आदि प्रसिद्ध कलाकार भी मौजूद थी। उस समय नाटक मण्डली में स्वर्गीय हयात् नामक एक सुन्दर लड़का था जो स्त्रियों के पात्र निभाया करता था। नवाब साहब के शासन काल में नाटक मण्डली का रंगमंच वर्तमान राज टाकीज हुआ करता था जिसके प्रमुख नाटककार 'मोहम्मद उमर जाम' साहब थे। इन्होंने नाटक मण्डली में 37 नाटक लिखे थे और ठुमरियाँ, गजलें आदि भी लिखा करते थे और जयपुर के स्वर्गीय पंडित अमरनाथ अटल जाम साहब के बहुत करीबी दोस्त थे।

नवाब इब्राहिम अली खान की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र सन् 1930 ई. में नवाब सआदत अली खाँ टोंक रियासत के शासक नियुक्त हुये। नवाब सआदत अली खान आपको भी शायरी के अतिरिक्त गाने आदि का भी बहुत शोक था तथा नाटक का भी बड़ा शौक था उन्होंने एक नाटक मण्डली भी बनायी थी। आपके शौक के कारण ही टोंक में एक नाटक घर भी बनाया गया था। जहाँ नाटकों का मंचन नाच गाने के साथ होता था। नाटक के शौक ने भी टोंक में भारतीय संगीत को बढ़ावा दिया। यहाँ बसन्त, होली, बहार आदि रागों के गीतों के अतिरिक्त शादी ब्याह के अवसर भी गाने व ठुमरियों की विषयवस्तु बने।

नवाब इब्राहिम अली खान के देहान्त के पश्चात् आपके शासनकाल के नियुक्त कलाकार कुछ बाहर चले गये और कुछ कलाकार टोंक में ही रहे। नवाब इब्राहिम अली खाँ के पश्चात् टोंक में संगीत समारोह के आयोजन भी कम होने लगे थे। क्योंकि नवाब सआदत अली खाँ को नाटकों से अत्यधिक प्रेम था और नवाब इब्राहिम अली खाँ के शासनकाल के नियुक्त कलाकारों में स्वर्गीय मोहम्मद अली खाँ, स्वर्गीय बून्दु खाँ, स्वर्गीय अहमद जान खाँ आदि कलाकार टोंक में ही मौजूद रहे।

नवाब सआदत अली के समय में नवाब खानदान के साहबजादों ने इन कलाकारों से गायकी की शिक्षा भी प्राप्त की थी, जिनमें स्वर्गीय अब्दुल माजिद खाँ, स्वर्गीय दाता मियाँ, स्वर्गीय अहमद सईद खाँ, स्वर्गीय अशरफ खाँ,

स्वर्गीय शरीफ खाँ, स्वर्गीय मोहम्मद अतीक खाँ, स्वर्गीय यासीन मोहम्मद खाँ साहब, स्वर्गीय हामिद खाँ आदि कलाकार प्रसिद्ध थे।

नवाब सआदत अली खाँ के शासनकाल में नाट्य कला का सम्पूर्ण विकास हुआ। नवाब साहब के अत्यधिक प्रेम प्यार के कारण यहाँ पेशेवर नाटक मण्डलियाँ आना प्रारम्भ हुई यहाँ पर प्यारी का नाटक एवं 'राव साहब' आदि नाटकों के प्रमाण मिलते हैं। टोंक में प्रसिद्ध नाटक कम्पनियाँ आया करती थी, जिससे नवाब सआदत अली खाँ को भी इस नाट्य कला के क्षेत्र में रुचि उत्पन्न हुई व जनता में भी नाटक देखने का शौक पैदा हुआ। नवाब सआदत अली खाँ टोंक गुलजार बाग की कोठी में निवास करते थे। आप नाटक व शायरी के ही शौकिन नहीं थे बल्कि आपको क्रिकेट, शिकार, टेनिस आदि का भी शौक था। यहाँ तक कि आपने अपने निजी खर्चे से अपनी एक क्रिकेट टीम भी बना रखी थी। इस टीम ने उस समय 'काल्विन शिल्ड' भी जीती थी।

नवाब सआदत अली खाँ साहब शाम के समय हमेशा खलील क्लब में टेनिस खेलने जाया करते थे। इनके अतिरिक्त आप शेरो शायरी के बहुत प्रेमी थे। हिन्दी भाषा में 'राज' आपका उपनाम था। मुशायरों में अपनी शेरो–शायरी किसी अन्य कलाकारों से सुनते थे और शाम के समय नवाब साहब नाटक एवं सिनेमा देखने जाया करते थे।

नवाब सआदत अली खान के समय में जो भी शायर थे वह बहुत अच्छी शेरो–शायरी किया करते थे। इनमें स्वर्गीय दाग देहलवी के शिष्य स्वर्गीय मोहम्मद सईद खान आशिक थे आपकी शायरी के क्षेत्र में पूरे हिन्दुस्तान में आपका नाम प्रसिद्ध था।

आपने नवाब इब्राहिम अली खान के दौर में ही शायरी की शुरुआत की थी। आपने जीवन के आखिरी समय तक शेरो शायरी को कायम रखा और सन् 1940 ई. में आपका देहान्त हो गया। इनके पश्चात् स्वर्गीय हाफिज आलमगीर खाँ कैफ आपका अधिकांश समय झालावाड़ के महाराजा भवानीसिंह के साथ व्यतीत हुआ और आपको कैफ साहब भगवान मानते थे क्योंकि दाग देहलवी के पश्चात् आपका नाम ही गजलों में प्रसिद्ध था और आपने टोंक में भी शेरो शायरी के बहुत से आयोजन किये थे। आपकी शायरी दमदार हुआ करती थी।

इसी प्रकार स्वर्गीय मौलवी सैफ साहब इस दौर के बहुत प्रसिद्ध शायर थे। इसी समय में स्वर्गीय सैयद मेहमूदुल हसन सोलत साहब भी बहुत अच्छे शेर कहते थे। आप अरबी, फारसी के प्रसिद्ध विद्वान थे।

नवाब सआदत अली खाँ साहब के शासनकाल में सैंकड़ों ही शेरों–शायरी करने वाले शायर थे। इसी प्रकार स्वर्गीय हनुमान सिंहल साहब जो लेखक भी थे जो वर्तमान में उनके वंशज टोंक में स्थित है और हनुमान सिंहल साहब ने टोंक का इतिहास व टोंक संबंधित बहुत सी किताबों की रचना की थी। उनके पिता स्वर्गीय मास्टर रामनिवास जी अग्रवाल 'नदीम' साहब नवाब सआदत अली खाँ के दरबार में मुशायरों में शेरो–शायरी किया करते थे और नवाब साहब इन्हें बहुत सम्मान दिया करते थे। आप उस समय टोंक दरबार हाई स्कूल के अध्यापक थे। आपके अतिरिक्त उस दौर के अन्य शायरों में स्वर्गीय साहबजादा इमदाद अली खाँ, स्वर्गीय मती उल्लाह खाँ साहब, स्वर्गीय बिस्मिल सईदी, वासिक साहब, स्वर्गीय साहबजादा, शफीकुर्रहमान, स्वर्गीय साहबजादा हामिद सईद खाँ, जाम साहब, स्वर्गीय अख्तर शिरानी उस समय के प्रसिद्ध शायर हुआ करते थे। नवाब सआदत अली खां साहब स्वयं भी बहुत अच्छे शायर और कवि थे। आपके शासनकाल में स्वर्गीय एजाज सिद्धिकी, स्वर्गीय शहरी भोपाली, स्वर्गीय अहतर हापुड़ी, स्वर्गीय जिगर मुरादाबादी, स्वर्गीय हफीज जालंधरी, स्वर्गीय सीमा व अकबराबादी, स्वर्गीय माहेरुल कादरी, स्वर्गीय जोश मलयासिनी, स्वर्गीय सागर निजामी, स्वर्गीय मालवी मंजर, स्वर्गीय अकबराबादी आदि विद्वान टोंक में आकर अपनी शेरो शायरी से यहाँ का वातावरण खुशनुमा कर देते थे। उस दौर के महत्वपूर्ण कवियों में स्वर्गीय डॉ. मनोहर सहाय अनवर एवं स्वर्गीय मास्टर रामनिवास 'नदीम' आप उस दौर के हिन्दु समाज के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने उर्दू, फारसी में एम.ए. किया था। और आप फारसी में शेरो–शायरी भी कहते थे। टोंक में रंगमंच की स्थापना का श्रेय नवाब इब्राहिम अली खान साहब के शासनकाल से ही प्रारम्भ हो गया था। बाहर से नाटक मण्डलियों का आगमन शुरु हो गया था। ओर टोंक में नाट्य कला का क्षेत्र बढ़ता ही गया ओर इन नाटकों को मंच पर प्रस्तुति के लिये टोंक में 'राज थियेटर कम्पनी' का निर्माण हुआ। राज थियेटर कम्पनी में काम करने वाले कलाकारों को वेतन आदि दिये जाते थे। इनमें स्वर्गीय सिद्धिक अली, स्वर्गीय जमाल मियाँ, स्वर्गीय सर्वश्री अब्बार खाँ, स्वर्गीय बशीर खाँ आदि इन कलाकारों के नाम आज भी टोंक के पुराने लोगों को याद है।

इन नाटकों का मंचन अधिकांश रात के समय ही हुआ करता था और ये नाटक लगभग तीन से पाँच

घण्टों तक चलता था। इन नाटकों में अधिकतर ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाया जाता था तथा इन नाटकों में गाने आदि हुआ करते थे। उस दौर के नाटक लिखने वालों में कुछ लोगों को बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई, जिनमें स्वर्गीय उस्ताद आबरु, स्वर्गीय दशरथ सक्सेना, स्वर्गीय पंडित देव नन्दन प्रसाद, स्वर्गीय मुश्तर खैराबादी, स्वर्गीय जलालुद्दीन आदि कलाकार शामिल थे।

नवाब सआदत अली खाँ के दौर में मुस्लिम समाज के लोग ही नहीं वरन् हिन्दू समाज के लोग भी नाटकों की प्रस्तुति मंच पर प्रस्तुत किया करते थे। जिसमें राजा–रानी का नाटक व अन्य नाटकों को प्रस्तुत किया जाता था। यही नहीं उस समय भजन मण्डलियाँ भी हुआ करती थी जिसमें स्वर्गीय राम कुमार जी गायक स्वर्गीय मास्टर छितर मल जी हारमोनियम मास्टर थे नवाब साहब इन कलाकारों से भजन आदि सुना करते थे और स्वर्गीय डॉ. चान्दमल जी एल.डी.सी. जैसे कलाकार नवाब साहब को भजन–कीर्तनों के अवसर पर अपने घर बुलाया करते थे। ओर नवाब सआदत अली खाँ साहब इनके भजन–कीर्तनों से बहुत खुश होते ओर इन्हें कुछ भेंट व ईनाम भी दिया करते थे।

नवाब सआदत अली खाँ के शासनकाल में नियुक्त कलाकारों में स्वर्गीय मम्दु खाँ, स्वर्गीय मम्मु खाँ, स्वर्गीय गुलाम मोहम्मद खाँ तबला वादक थे और स्वर्गीय नन्हें खाँ, स्वर्गीय मोहम्मद हुसैन खान, स्वर्गीय भंवर लाल जी, स्वर्गीय मंजी लाला, स्वर्गीय तानु खाँ, स्वर्गीय छोटे खान, स्वर्गीय मुरनी खाँ, सारंगी वादक थे। ये सभी कलाकार उस समय नाटक मण्डली में कर्मचारी थे जो नाटकों के बीच–बीच में गाने–बजाने का कार्य किया करते थे।

नवाब सआदत अली खाँ के शासनकाल में ये सभी कलाकार वो हैं जिनके पिता नवाब इब्राहिम अली खाँ के दौर में मौजूद थे। ये उन्हीं की वंशज हैं।

नवाब साहब अपनी प्रजा को बहुत प्यार से रखते थे आपने कभी भी हिन्दू–मुस्लिम में भेदभाव नहीं किया।

नवाब सआदत अली खाँ साहब के शासनकाल में हिन्दू समाज के लोगों में भी बहुत अच्छे शायर हुआ करते थे जिनमें स्वर्गीय भौरा साहब, स्वर्गीय डॉ. मनसुख दास जी, स्वर्गीय डॉ. श्यामलाल जी, स्वर्गीय डॉ. रामनिवास जी जो एक लेखक भी थे। और स्वर्गीय जगदीश बोहरा साहब ये सभी कलाकार नवाब साहब के समय में उर्दू शेरो–शायरी के प्रसिद्ध कलाकार थे। उस दौर में शायरी के बड़े–बड़े मुशायरे होते थे जिनमें ये सभी कलाकार अपनी–अपनी कला की प्रस्तुति दिया करते थे ।

जिस प्रकार मुस्लिम लोग चारबैंत लिखते व गाते थे ठीक उसी प्रकार हिन्दुओं में भी उस समय बहुत अच्छे उर्दू के शायर होते थे और वो चारबैंत भी लिखा करते थे। स्वर्गीय कैफ साहब, स्वर्गीय सैफ साहब, स्वर्गीय हुनर साहब आदि ये सब उर्दू के कलाकार थे और नवाब सआदत अली खाँ के समय हिन्दू–मुस्लिम सभी भाई–भाई की तरह रहते थे किसी में कोई मतभेद नहीं था।

नवाब सआदत अली खाँ साहब के समय नाटक व शायरी का ही विकास नहीं हुआ बल्कि यहाँ ख्याल व ठुमरियाँ गाने वाले बड़े–बड़े कलाकारों का भी जन्म हुआ जिनमें एक थी स्वर्गीय दिवानी दुर्गा उस समय एक प्रसिद्ध गायिका थी जो नवाब साहब के शासनकाल में ठुमरियाँ गाया करती थी उनके पास ठुमरियों का खजाना था। दिवानी दुर्गा जब ठुमरी गाती थी तो उसके अंग भाव भी प्रस्तुत किया करती थी। जैसे उदाहरणार्थ एक ठुमरी प्रस्तुत है–

स्थाई – पिया कर घर देखो
धरकत है मोरि छतियाँ

अन्तरा – कैसी ये रतियाँ
कारी पीली अतहि डरावे
आन अचानक तुम बैंय्या गहली नी

परन्तु इनकी अन्य कोई और ठुमरियाँ हमें प्राप्त नहीं हो सकी।

इस प्रकार सन् 1947 ई. में नवाब सआदत अली खान की मृत्यु होने के पश्चात् इनके शासनकाल में जो कलाकार नियुक्त थे कुछ कलाकार स्वर्गवासी हो गये और कुछ टोंक से बाहर चले गये और कुछ कलाकार

राजस्थान में ही रहे व कुछ राजस्थान से बाहर चले गये और बहुत से कलाकारों ने आकाशवाणी में अपना स्थान बनाया व कुछ कलाकार स्कूल व कॉलेजों में शामिल हो गये और आज उन्हीं कलाकारों की वंशज व पीढ़ी आकाशवाणी में टॉप ग्रेड, ए ग्रेड के कलाकार वर्तमान में नियुक्त हैं और नवाब सआदत अली खान की मृत्यु के पश्चात् उनके छोटे भाई फारुक अली खान नवाब बने। उसी दौर में भारत आजाद हुआ और राजस्थान बनने का कार्य प्रारम्भ हुआ। टोंक रियासत को आजाद भारत में सम्मिलित करने का निर्णय लिया गया। नवाब फारुक् अली खान को केवल 7 महिने ही शासन का अवसर मिला। सन् 1948 ई. में उनका देहान्त हो गया तथा उनके छोटे भाई इस्माईल अली खान टोंक के नवाब नियुक्त हुए। इनका शासन काल केवल एक महीने ही रहा और टोंक में प्रशासक भारत सरकार की ओर से नियुक्त कर दिया गया। 30 मार्च सन् 1949 ई. को राजस्थान की स्थापना के पश्चात् टोंक रियासत राजस्थान में सम्मिलित हो गई और इस प्रकार लगभग 150 वर्ष पुरानी रियासत समाप्त हो गई। उसकी राजधानी शहर टोंक को जिला टोंक का मुख्यालय बना दिया गया।

***संगीत विभाग**
वनस्थली विद्यापीठ,
जयपुर (राज.)

संदर्भ–

1. चौधरी प्रताप सिंह, 8 राजस्थानः संगीत और संगीतकार
2. चौधरी प्रताप सिंह, 92–93, राजस्थानः संगीत और संगीतकार
3. चौधरी प्रताप सिंह, 93–94, राजस्थानः संगीत और संगीतकार
4. सिंहल हनुमान, 155, 157, टोंक का इतिहास
5. क्षीरसागर, डॉ. मंजूश्री, 101, राजस्थान की संगीत परम्परा
6. चौधरी प्रताप सिंह, 94, राजस्थानः संगीत और संगीतकार
7. चौधरी प्रताप सिंह, 94, राजस्थानः संगीत और संगीतकार
8. सिंहल, हनुमान, 151, 152, टोंक का इतिहास
9. बोहरा पारुल, 10–13, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
10. बोहरा पारुल, 23–24, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
11. 'निर्विरोध' डॉ. तारादत्त, 62, राजस्थान का पारसी रंगमंच
12. 'निर्विरोध', डॉ. तारादत्त, 92, राजस्थान का पारसी रंगमंच
13. डॉ. सोमनाथ, 107, पारसी थियेटर
14. 'निर्विरोध', डॉ. तारादत्त, 97, राजस्थान का पारसी रंगमंच
15. चौधरी प्रताप सिंह, 93, राजस्थानः संगीत और संगीतकार
16. सिंहल हनुमान, 164, टोंक का इतिहास
17. सिंहल हनुमान, 166, टोंक का इतिहास
18. चौधरी प्रताप सिंह, 93, राजस्थानः संगीत और संगीतकार
19. चौधरी प्रताप सिंह, 94–95, राजस्थानः संगीत और संगीतकार

20. बोहरा पारुल, 2–7, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
21. बोहरा पारुल, 74–77, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
22. बोहरा पारुल, 101–103, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
23. बोहरा पारुल, 113 – 117, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
24. बोहरा पारुल, 124, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
25. बोहरा पारुल, 126–127, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
26. बोहरा पारुल, 134–135, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
27. बोहरा पारुल, 140, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन
28. बोहरा पारुल, 147–148, उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ 'मेहर पिया' की भारतीय संगीत को देन.
29. चौधरी प्रताप सिंह, 115, राजस्थानः संगीत और संगीतकार